



# Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03



# Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03

ଫାଲ୍‌ଗୁନ ଚନ୍ଦ୍ର ଚତୁର୍ଥୀ

**S4U**<sup>TM</sup>  
by  
SHIVALI



Exotic 303

S4U<sup>TM</sup>  
by  
SHIVALI



Exotic 305

S4U<sup>TM</sup>  
by  
SHIVALI



श्रीशुककृत-गोपवात्सवर्णने  
वचर(१)तायामपि विदुस्तस्य जीवे"दिव्यारभ्यः  
अमहारश्रवणोप्यविकं वसि-दुर्गमुच्यते । वसिष्ठतुलिनः  
पे गोरक्षय वाणिज्यं कुसीदं निश"मिति-अजयव  
मुन्विधा तत्र वयं गोवृत्तयो-

Exotic 304

S4U  
SHIVALI



Exotic 306

संन्यः 'कुविभारदय क  
। वार्तो चतुर्विधा तत्र य  
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णवचने तथेवा-  
गो-विण्णेशि श्रीभाककन-गोपवासवर्गिने

**S4U**  
by  
SHIVALI



Exotic 301

S4U<sup>TM</sup>  
SHIVALI



Exotic 302





Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

**S4U**™  
by  
SHIVALI

**Exotic**  
LOVELY & LAVISH VOL: 03